॥ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार ॥

शिक्षणमहर्षि डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापुर संचलित

रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय, उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

नॅक मानांकन Grade

College With Potential for excellance (U. G. C. Status)

मार्क्सवादी हिन्दी साहित्य

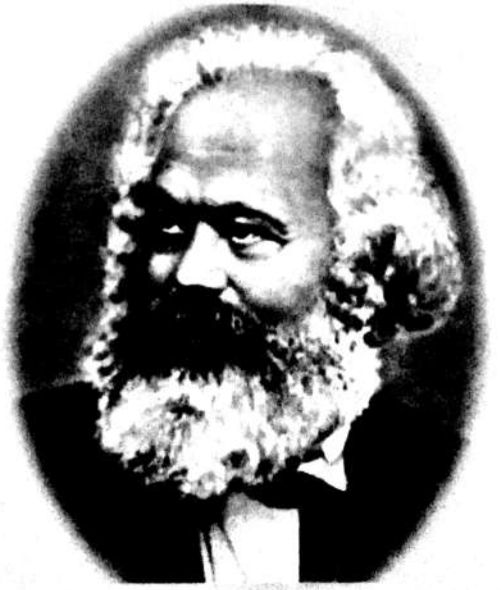

संपादक

डॉ. देवीदास इंगळे

Scanned by CamScanner

||ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार ||

शिक्षणमहर्षि डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापुर संचलित

रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय, उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

College With Potential for excellance (U. G. C. Status)

मार्क्सवादी हिन्दी साहित्य

संपादक

डॉ. देवीदास इंगळे

सहयोगी संपादक

प्रा. श्रीराम नागरगोजे   डॉ. केशव क्षीरसागर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली पुरस्कृत

राष्ट्रीय हिन्दी संगोष्ठी

Scanned by CamScanner

ISBN 978-93-83411-02-3

- मार्क्सवादी हिन्दी साहित्य

- संपादक :- डॉ. देवीदास इंगळे

- प्रकाशक

  विद्यावती प्रकाशन

  लातूर, जि. लातूर - 413531.

- शब्द सज्जा

  शौर्य पब्लीकेशन, (श्री. गोदाम अरुण)

  8149668999, 8483959442

- मुखपृष्ठ

  शौर्य पब्लीकेशन, (श्री. गोदाम अरुण)

  8149668999, 8483959442

- मुद्रक

  आर.आर. प्रिंटर्स , एम.आय.डी.सी. लातूर - 413512

- प्रथमावृत्ती : 29 नवम्बर 2013

- मुल्य 300/-

Scanned by CamScanner

६०	नागार्जुन के काव्य में मार्क्सवादी चिंतन	डॉ. आबासाहेब हरिभाऊ राठोड	188-189
६१	मार्क्सवादी विचारों का संवाहक कवि : मुक्तिबोध	प्रा. बाबासाहेब माने	190-192
६२	मार्क्सवादी चिंतन : हिंदी काव्य	प्रा.डॉ.मंगल कप्पीकेरे	193-195
६३	निराला के काव्य में मार्क्सवादी विचारधारा : एक अनुशीलन	डॉ. सूर्यकांत शिंदे	196-198
६४	नयी कविता में मार्क्सवादी चिंतन	जयभीम मुरहरी वाघमारे डॉ.हाशम बेग मिर्झा	199-201
६५	मार्क्सवादी चिंतन : जगदीश गुप्त के 'शम्बूक' के संदर्भ में	डॉ. सुरेश शिंदे	202-204
६६	दामोदर खेडसे के काव्य में मार्क्सवादी चिंतन	प्रा.महिपती जगन्नाथ शिवदास	205-207
६७	नागार्जुन की कविता : मार्क्सवाद के धरातल पर	डॉ. भाउसाहेब आर. नळे	208-210
६८	हिंदी की प्रगतिवादी कविता	प्रा.संजय नाईनवाड	211-213
६९	राष्ट्रीय मार्क्सवाद और नागार्जुन	प्रा.गंगाधर धु. बिराजदार	214-216
७०	डॉ.शिवमंगल सिंह ' सुमन ' के काव्य में प्रगतिवादी चेतना	प्रा.नागराज उत्तमराव मुळे	217-219
७१	नागार्जुन के काव्य में प्रगतिवादी चेतना	प्रा.डॉ.पंडित बन्ने	220-222
७२	मार्क्सवादी चिंतन : हिंदी काव्य (आधुनिक कविताओं के विशेष संदर्भ में)	प्रा. गाडे यु.के.	223-226
७३	मार्क्सवादी चिंतन : हिन्दी काव्य	डॉ.रेखा मुळे (कैवाडे)	227-229
७४	मार्क्सवादी चेतना के कवि : डॉ.रणजीत	डॉ.पांडुरंग ज्ञानोबा चिलगर	230-232
७५	मार्क्सवादी चितंन : हिंदी काव्य	डॉ. शिंदे अनिता मधुकरराव	233-235
७६	मार्क्सवाद और हिन्दी कविता	प्रा.डॉ.हणमंत पवार	236-237
७७	मार्क्सवादी चिंतन और हिन्दी साहित्य: कविता के संदर्भ में	प्रा.विनायक कल्याणराव आखाडे	238-240
७८	गजानन माधव मुक्तिबोध के काव्य में मार्क्सवादी चेतना	डॉ. संतोष भड	241-243
७९	मार्क्सवादी चिंतन और हिंदी कविता (फीजी के विशेष संदर्भ में)	प्रा. बालाजी बळीराम गरड	244-246
८०	मार्क्सवादी चिंतन और हिंदी कविता	प्रा. डॉ.प्रेम घोडके	247-249
८१	मार्क्सवादी चिंतन : हिन्दी काव्य	डॉ. शिवकन्या सुदामराव निपाणीकर	250-252
८२	हिंदी-काव्य में मार्क्सवादी चेतना	साळुंके शिवहार भुजंगराव	253-255
८३	श्री. शिवमंगलसिंह "सुमन" के काव्य में प्रगतिवाद	श्री. दरेप्पा म. बताले	256-258
८४	निराला के काव्य में मार्क्सवादी चिंतन	शेख मुजमील इब्राहीम	259-261
८५	मार्क्सवादी चिंतन: हिंदी काव्य	शेख मोहसीन इब्राहीम	262-264
८६	मार्क्सवादी चिंतन : 'हिन्दी काव्य'	प्रा. भारती नकुलराव कांबळे	265-267
८७	मार्क्सवादी विचारधारा और कुकुरमुत्ता	श्रीमति अंबुजा एन. मळखेडकर	268-270
८८	मार्क्सवादी चिंतन : हिंदी काव्य (निराला और पंत के काव्य के संदर्भ में)	प्रा. संतोष चव्हाण	271-273

Scanned by CamScanner

61

मार्क्सवादी विचारों का संवाहक कवि : मुक्तिबोध

प्रा. बाबासाहेब माने
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्री शिव छत्रपति महाविद्यालय,
जुन्नर, जिला - पुणे

नई कविता एवं समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर गजानन माधव मुक्तिबोध का हिंदी साहित्य में असाधारण स्थान है । उन्होंने अपने जीवन में कविता के अतिरिक्त साहित्य की अन्य विधाओं पर भी सफलता से कलम चलाई है, परंतु एक कवि के रूप में उनकी ख्याति सर्वविदित है। उनकी कविताएँ "तारसप्तक' के माध्यम से समाज के सम्मुख उपस्थित हुई और बाद में जाकर उनकी कविताएँ हिंदी संसार में महत्त्वपूर्ण स्थान पाने लगीं । असल में मुक्तिबोध जी के निधन के पश्चात् उनकी कविताएँ प्रकाश में आयी हैं । उनकी कविताओं में उनकी वैयक्तिक पीड़ा तथा समाज का दु:ख-दर्द कभी फैंटेसी के माध्यम से तो कभी मार्क्सवादी चेतना के माध्यम से उमड़ पड़ा है । उनकी कविताएँ उनकी अपनी संवेदना की वाहक होकर भी श्रमिकों एवं मजदूरों की पीड़ा और उनकी समस्याओं को उजागर करती हैं उनकी अनेक कविताओं में मार्क्सवादी चेतना का स्वर प्रखर रूप में मिलता है । अत; उनकी कविताओं में निहित मार्क्सवादी विचारों एवं मूल्यों पर दृष्टिक्षेप करने से पहले हमें मार्क्सवाद के बारे में जानकारी हासिल करनी जरूरी होगी। तभी जाकर हम मार्क्सवादी विचारों एवं मूल्यों को ठीक तरह समझ पाएंगे और मुक्तिबोध की कविताओं में निहित मार्क्सवादी विचारों एवं मूल्यों पर सही आलोचना कर पाएँगे । इसलिए प्रस्तुत शोधालेख में हमने सर्वप्रथम मार्क्सवाद का अर्थ एवं मार्क्सवादी विचारों पर संक्षेप में प्रकाश ड़ाला है।

"मार्क्सवाद' को हिंदी में "साम्यवाद' के नाम से जाना जाता है । "साम्यवाद' यह शब्द अंग्रेजी के "कम्यूनिज़्म' शब्द का हिंदी अनुवाद है। "साम्यवाद' का शब्दकोशों के अनुसार अर्थ होता है- ""देश की राजनीतिक तथा आर्थिक गतिविधियों में सभी को भाग लेने का समान अवसर मिलना चाहिए ।''१ यानी किसी भी देश के वासियों को उसके देश में राजनीतिक, समाजिक और आर्थिक क्षेत्र में समान रूप से अवसर एवं हिस्सा मिलना चाहिए ।

Scanned by CamScanner

तभी उस देश में साम्यवाद की संकल्पना पूर्णत: तक पहुँच सकती है और वह देश साम्यवादी कहलाने का अधिकारी हो सकता है । अन्यथा वहाँ अगर उक्त क्षेत्रों में सभी लोगों को समान अवसर नहीं मिलेगा तो वह देश साम्यवादी न कहलाकर विषमतावादी कहलाएगा। कार्ल मार्क्स का सिद्धांत मूलत: पूँजीवाद की नींव पर विकसित हुआ है । वह पूँजीवाद को अपना दुश्मन मानता है और मजदूरों एवं श्रमिकों का प्रबल रूप से समर्थन करता है । उसके अनुसार पूँजीवादी वर्ग श्रमिकों एवं मजदूरों का शोषण बड़े पैमाने पर करता है और अपने लिए ही सभी भौतिक सुख-साधन जुटाता रहता है । वह श्रमिकों की बदौलत पूँजीपति हो जाता है और श्रमिकों के विकास की ओर ध्यान भी नहीं देता। इतना ही नहीं, बल्कि वह श्रमिकों और मजदूरों का अनेक तरह से शोषण करता है और उन्हें बद्दत्तर जिंदगी जीने के लिए मजबूर बना देता है। इसलिए ऐसे शोषक वर्ग के खिलाफ क्रांति करके अपने हक को हासिल करने की मजदूरों एवं श्रमिकों को जरुरत है । परिणामत: मार्क्सवाद उस श्रमिक वर्ग को अपने विचारों के माध्यम से पूँजीवाद के खिलाफ क्रांति करने के लिए तैयार करता है। मार्क्सवादी विचारों के अनुसार भैतिक तत्व ही इस दुनिया के मूल में है और इसी पर विश्व की चरम सत्ता टिकी हुई है । इसीलिए भौतिक जगत् को मूल मानकर उसकी यथार्थता को प्रश्रय देना अनिवार्य है और उस यथार्थता के माध्यम से सर्वहारा वर्ग में वैचारिक एवं क्रांतिपरक विकास पैदा करना हर मार्क्सवादी विचारधारा के अनुयायी का परम कर्तव्य है । मार्क्सवादियों ने आर्थिक समानता पर ज्यादा जोर दिया है, परंतु यहाँ पर अर्थ को केवल रूपये-पैसों की शक्ल में देखना उचित नहीं होगा । उसे जीवन के साथ के जोड़कर देखना और उसके माध्यम से सर्वहारा के दु:ख-दर्दों को नष्ट करना ही मार्क्सवादी विचारों के आर्थिक सूत्र को बढ़ावा देना है। इस संदर्भ में " यशपाल' का कथन बड़ा सार्थक एवं अर्थगर्भित प्रतीत होता है। उन्होंने लिखा है कि ""अर्थ से अभिप्राय: केवल रूपया-पैसा नहीं, बल्कि जीवन-रक्षा के साधन, परिस्थितियाँ और जीवन के लक्ष्य हैं ।''२ उक्त कथन से ही स्पष्ट होता है कि मार्क्सवादी दृष्टि में अर्थ केवल रूपया-पैसा न होकर जीवन क़े रक्षण के खातिर काम आनेवाले तमाम साधन और जीवन के प्रमुख लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक वस्तुएँ अथवा परिस्थितियाँ हैं । इससे मार्क्स की आर्थिक अवधारना को समझने में आसानी हो जाती है। अर्थ को जीवन के विभिन्न कोणों में शामिल करके, जीवन को लक्ष्य की ओर अग्रसर करना ही सही मायने अर्थ की व्यापकता को परिभाषित करना है । इस तरह के कई विचार मार्क्सवादियों ने समय-समय पर मार्क्सवाद की आलोचना करते हुए व्यक्त क़िए हैं । इसके पश्चात् जब हम मार्क्सवादी मूल्यों

Scanned by CamScanner

की ओर नजर दौड़ाने लगते हैं तो हमें उसके कई महत्वपूर्ण मूल्य भी हाथ लग जाते हैं, जो कमोबेश मात्रा में मुक्तिबोध के काव्य की धरोहर बन गए हैं । इन मूल्यों में सामयिकता एवं यथार्थता, वर्गविहीन समाज की संकल्पना, मानवता, सर्वहारा वर्ग की पीड़ा, वैज्ञानिकता, यथार्थता, परिवर्तन की अटलता तथा क्रांतिः साहित्य का उद्देश्य आदि को शामिल किया जा सकता है । अतः इन विचारों एवं मूल्यों की दृष्टि से ही मुक्तिबोध के काव्य की आलोचना प्रस्तुत शोधालेख में की जा रही है।

क्रांति : साहित्य का उद्देश्य -

मार्क्सवादी साहित्य को निरूद्देश्य नहीं मानता । उसका उद्देश्य यदि एक ओर ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो हर परिस्थिति में देश की रक्षा में समर्थ हो सके तथा दूसरी ओर उसका सबसे महान लक्ष्य पूँजीवादी सामाजिक ढाँचे को समूलतः बदल देना है । कलात्मकता के नाम पर निरूद्देश्य प्रतिक्रियागामी विचारों को मार्क्सवादी साहित्य में कोई स्थान नहीं है । ""ज्दानोव के अनुसार निर्देशहीन संप्रदन और निरूद्देश्य साहित्य-रचना पूँजीवाद के बिना संभव नहीं है । संसार के मजदूर आंदोलन के प्रसिध्द नेता "जार्ज दिमात्रोव' ने सोवियत लेखकों की एक सभा में कहा था, कविता, उपन्यास आदि कलाकृतियों के रूप में तुम हमें एक तेज हाथियार दो जो संघर्ष में काम आ सके । अपनी कला से क्रांतिकारी कर्त्ता बनाने में मद्द करो ।''१२ अतः मुक्तिबोध का काव्य संसार इसी मार्क्सवादी विचाराधारा का संवहन करता दिखाई देता है । उनकी कविताओं में मानवता को प्रस्थापित करने की सफल कोशिश हुई है । उनके काव्य का उद्देश्य पूँजीवाद के खिलाफ सामाजिक क्रांति लाना है और जनशोषक शत्रुओं का समूल नाश करना रहा है ।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मुक्तिबोध के काव्य की आलोचना करते हुए अनेक आलोचकों ने उन्हें राहों के अन्वेषी, अस्तित्ववादी, शुध्द प्रगतिवादी आदि विशेषणों से विभूषित किया है। उनकी कविताओं में भले ही ये सारी बातें दिखाई देती हों। परंतु वे अपनी कविताओं के माध्यम से मार्क्सवादी विचारों का प्रबलता से सवंहन करने वाले कवि निश्चित रूप से हैं । इसमें कोई दो र

ाय नहीं हो सकती ।

संदर्भ संकेत

१) अशोक मानक हिंदी-हिंदी शब्दकोश - डॉ. शिवप्रसाद शास्त्री , पृ. १०३२

२) मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल - डॉ. पारसनाथ मिश्र, पृ. ३२

१२) मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल - डॉ. पारसनाथ मिश्र, पृ. ६६

Scanned by CamScanner

ISBN 978-93-83411-02-3

Scanned by CamScanner